राष्ट्रपति ने किया परमहंस योगानंद की पुस्तक के हिन्दी अनुवाद का विमोचन

प्रमुख संवाददाता

रांची। झारखंड स्थापना दिवस के मौके पर झारखंड आए भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने बुधवार को योगदा सत्संग मठ का भ्रमण किया। इस मौके पर उन्हों परमहंस योगानंद की लिखी पुस्तक गॉड टॉक ऑफ अर्जुनः द भागवत गीता के हिन्दी अनुवाद का विमोचन किया।

इस मौके पर उन्होंने कहा कि योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया के द्वारा पूरे विश्व में निरंतर योगदान के सौ वर्ष पूरे होने पर मैं इस सोसाइटी, और परमहंस योगानन्द के विचारों से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को बधाई देता हूँ। इन सौ वर्षों में योगदा सत्संग सोसाइटी ने पूरे विश्व में भारत के योग विज्ञान को प्रसारित करने में सराहनीय योगदान दिया है। इस शताब्दी वर्ष मेंए गीता पर परमहंस जी की टीका के हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन समयानुकूल है और उपयोगी भी। सन 1995 में मूल अँग्रेजी टीका का प्रकाशन हुआ था। अब तक स्पैनिश, जर्मन, इटालियन और पुर्तगाली भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध थे। आज इस हिन्दी अनुवाद के प्रकाशन द्वारा एक बहुत बड़े पाठक वर्ग के लिए इस पुस्तक में निहित जीवनोपयोगी ज्ञान सुलभ हो गया है। इस अनुवाद के लिए स्वामी नित्यानन्द जी प्रशंसा के पात्र हैं।

उन्होंने का कि मैं मानता हूँ कि अध्यात्म हमारे देश की आत्मा है जो पूरे विश्व के लिए भारत की एक महत्वपूर्ण देन है। विश्वस्तर पर भारत के अध्यात्म को सम्मानित और लोकप्रिय बनाने का मार्ग स्वामी विवेकानंद और परमहंस योगानंद ने प्रशस्त किया था। एक रोचक ऐतिहासिक संयोग सेए वर्ष 1893 में स्वामी विवेकानंद के शिकागो संबोधन ने भारतीय अध्यात्म के बारे में पश्चिम में जागृति की एक नई लहर पैदा की थी और इसी वर्ष गोरखपुर में परमहंस योगानंद का मुकुंद लाल घोष के नाम से अवतरण हुआ था।

उन्होंने कहा कि यह जानकारी मुझे अभिभूत करती है कि 1918 से 1920 तक रांची के इसी आश्रम को परमहंस योगानंद ने अपनी कर्मस्थली बनाया था। उसके बाद अगले बत्तीस वर्षों तक वे सेल्फ रियलाइजेशन फैलोशिप के माध्यम से अमेरिका में लाखों

लोगों को क्रिया योग की शिक्षा से लाभान्वित करते रहे। इस दौरान, सन 1935 में जब वे भारत आए तब भी उन्होंने इस आश्रम को अपनी उपस्थिति से पवित्र किया था। महात्मा गांधी भी सन 1925 में इस आश्रम में आए थे। यहाँ आना मेरे लिए बहुत खुशी की बात है।

उन्होंने कहा कि परमहंस योगानंद का संदेश अध्यात्म का संदेश है। वह धर्म से परेए सभी धर्मों का सम्मान करने काए विश्व.बधुत्व का नजरिया है। वे मानते थे कि जिस तरह रोशनी, हवा और पानी सबके लिए हैंए उसी तरह ऋषि-मुनियों द्वारा विकसित किया गया भारत का योग-विज्ञान भी पूरी मानवता के लिए है।

गीता में भारत का यही योग शास्त्र श्री कृष्ण और अर्जुन के संवाद के रूप में समझाया गया है। अपनी टीका में परमहंस योगानंद ने गीता के मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए मार्गदर्शन प्रदान किया है। हर मनुष्य के अंदर चलने वाले युद्ध को उन्होंने गीता का विषय माना है। उन्होंने कहा कि परमहंस योगानंद के अनुसार गीता दैनिक जीवन के लिए एक पाठ्य-पुस्तक भी है। वे कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को कुरुक्षेत्र की अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी है और इसे जीतना भी है।

उन्होंने का कि गीता पर अपनी टीका को परमहंस योगानन्द 'आत्म-साक्षात्कार का राजयोग विज्ञान' कहते हैं। वे आत्म-साक्षात्कार को गीता का उद्देश्य मानते हैं तथा राजयोग इस उद्देश्य को प्राप्त करने की पद्धति है। यहां बैठे अधिकांश लोग योग की विभिन्न पद्धतियों से परिचित हैं। स्वामी विवेकानंद और परमहंस योगानन्द ने राजयोग पर विशेष जोर दिया था। राजयोग की वैज्ञानिकता के कारण पश्चिम के लोगों पर इसका अधिक प्रभाव पड़ा। आज की युवा पीढ़ी के लिए भी राजयोग अधिक उपयुक्त लगता है।

उन्होंने मेरा यह मानना है कि जो व्यक्ति गीता को अपने आचरण में ढालेगा वह झंझावात में भीए स्थिर रहेगा, शांत रहेगा और सक्रिय रहेगा। प्रायः लोग सफलता-असफलता तथा जय-पराजय के चश्मे से सब कुछ देखते हैं। इस संदर्भ में गीता का कालजयी संदेश उसके अंतिम श्लोक में देखा जा सकता है

यत्र योगेश्वरो कृष्णरू, यत्र पार्थो धनुर्धररू
तत्र श्रीरू विजयो भूतिरू, ध्रुवा नीतिरू मतिरू मम

इस श्लोक का भाव है कि जहां योगेश्वर कृष्ण और धनुर्धर अर्जुन हैं, वहीं विजय भी सुनिश्चित है। इसका अर्थ यह है कि योग और दक्षता का समन्वय, तथा अध्यात्म तथा कौशल का समन्वय, विजय को सुनिश्चित करता है। गीता का अमर और जीवंत संदेश परमहंस योगानन्द की टीका के माध्यम से बहुत लोगों तक पहुंचता है।

उन्होंने कहा कि मैं योगदा सत्संग के आश्रमों और ध्यान-केन्द्रों द्वारा शिक्षाए स्वास्थ्य, प्राकृतिक आपदाओं से आहत लोगों की सहायता, अनाथ बच्चों के लालन-पालन और कुछ रोगियों की सेवा आदि क्षेत्रों में योगदान की सराहना करता हूँ।उन्होंने कहा कि मैं आशा करता हूँ कि हिन्दी में उपलब्ध परमहंस योगानन्द की गीता की टीका से लाखों करोड़ों लोग अपने जीवन को बेहतर बनाने का रास्ता जान पाएंगे, अपने आप को समझ पाएंगे।

उन्होंने कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि योगदा सत्संग सोसाइटी अध्यात्म का प्रसार और मानवता की सेवा करते हुए परमहंस योगानन्द के विश्व कल्याण के अभियान को इसी प्रकार आगे बढ़ाती रहेगी।

पूरे भारत की संस्कृति दिखी

योगदा आश्रम में राष्ट्रपति के स्वागत में सभी राज्यों के पारंपरिक वेश में लोग खड़े थे। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के वेश भूषा में लोग थे। आश्रम में प्रवेश द्वार से मुख्य मंच तक इस वेशभूषा में लोग दोनों किनारे खड़े थे। इसमें कई विदेशी भी शामिल थे। राष्ट्रपति ने सभी का हाथ जोड़ कर अभिवादन स्वीकार किया।

भजन में डूबे रहे लोग

राष्ट्रपति के पहुंचने के पहले समारोह स्थल पर संन्यासियों की ओर से भजन प्रस्तुत किया जा रहा था। करीब दो हजार की भीड़ भजन में डूबी रही। भजन का कार्यक्रम करीब एक घंटे तक चला। संस्था से जुड़े लोग तालियों के साथ भजन में साथ दे रहे थे। भीड़ परी तरह अनुशासित रही। संस्था के स्वयंसेवक भी व्यवस्था संभाल रहे थे।